# विद्यालयी ढाँचों में जनजातीय समुदाय की संस्कृति और सभ्यता के लिए जगह

## जांजगीर ज़िले में हाशिए वाले जनजातीय समुदाय के स्कूल अनुभवों और चुनौतियों का अध्ययन

**नीरज राणा**

विभिन्न जनजातीय समुदायों की तरह छत्तीसगढ़ के जांजगीर चांपा जिले में बसे हुए सबरिया समुदाय के बारे में भी तरह-तरह की मान्यताएँ हैं। ये मान्यताएँ समाज में उनकी नकारात्मक छवि प्रस्तुत करती है, जिस कारण स्कूल में पढ़ने वाले इस समुदाय के बच्चों की शिक्षा के रास्ते में कई बाधाएँ और मुश्किलें पेश आती है। जिनमें भाषा के माध्यम और सीखने की प्रक्रियाओं से जुड़ी बाधाएँ प्रमुख हैं।

नीरज राणा इस समुदाय के बच्चों के लिए संचालित कुछ शासकीय विद्यालयों के अवलोकन और चर्चाओं पर आधारित शोध अध्ययन में सबरिया समुदाय के बच्चों के बारे में शिक्षकों की मान्यताओं, बाधाओं और चुनौतियों को समझने की कोशिश करते हैं, और यह भी कि इन चुनौतियों से कैसे उबरा जा सकता हैं? अध्ययन के निष्कर्ष बताते है कि सबरिया समुदाय के बच्चों के लिए स्थापित सरकारी शालाएँ उन्हें अन्य समुदाय के बच्चों से अलग करती नज़र आती हैं। अत: विद्यालयी ढाँचों में जनजातीय समुदाय की संस्कृति और सभ्यता को स्थान देने की ज़रुरत है। सं.

जांजगीर ज़िले की शालाओं में शिक्षकों, विद्यार्थियों और समुदाय के साथ निरन्तर कार्य करने के दौरान कई बार शिक्षकों द्वारा सबरिया समुदाय से स्कूल आने वाले बच्चों के सीखने, स्कूल में इनकी अनियमित उपस्थिति और भाषा सम्बन्धी चुनौतियों और इससे सीख पाने की सम्भावना के सम्बन्ध में कई बातें कही जाती हैं। इस समुदाय के बच्चों को अपनी स्कूली शिक्षा के सन्दर्भ में कई प्रकार की आर्थिक, सामाजिक, मानसिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सबरिया समुदाय के लिए सरकार द्वारा संचालित इन स्कूलों में शिक्षक अकसर इन बच्चों को सीखने में, उनके अनुभवों को व्यापक करने में और उनकी आर्थिक जरूरतों में मदद नहीं कर पाते हैं और असहाय महसूस करते हैं। हालाँकि शिक्षक, समुदाय व बच्चों की कठिनाइयों के बारे में सब जानते हैं, और बताते भी हैं फिर भी बच्चों के प्रति उनका रुख व धारणा बहुधा जस की तस, यानी नकारात्मक ही दिखती है।

इस बात को गहराई से समझने के लिए हमने कुछ स्कूलों का अध्ययन करने के बारे में सोचा ताकि हम हाशिए पर आए बच्चों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों को समझ पाएँ, और यह जान पाएँ कि इन स्कूलों में शिक्षक इन मुद्दों से जूझने, उनको हल करने के लिए किन तरीकों का उपयोग करते हैं, क्या प्रयास करते हैं और इन प्रयासों में उन्हें किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हमारा मानना है कि इस स्थिति को बेहतर तरीके से समझना ऐसी ही अन्य परिस्थितियों में इन चुनौतियों को हल करने में मददगार हो सकता है। इस अध्ययन में हम चाहते हैं:

अ. बच्चों की भाषा और अन्य बाधाओं को समझने का प्रयास

ब. शिक्षकों द्वारा इस मुद्दे को हल करने और उन चुनौतियों का सामना करने के तरीकों को समझने का प्रयास

स. सबरिया समुदाय के बच्चों के प्रति शिक्षकों की मान्यताओं को समझने का प्रयास

## अध्ययन का कारण

सबरिया लोगों के बारे में बहुत-सी नकारात्मक बातें मानी जाती है। अधिकांश लोगों के लिए वे कभी-कभी नहाने वाले, शराब पीने वाले, घर में शराब बनाने वाले, नहीं सीख पाने वाले और साँप पकड़ने वाले लोग हैं। उन्हें अकसर इन अलंकारों से ही सम्बोधित भी किया जाता है। यह भी कि पढ़-लिखकर ये क्या करेंगे? इस समुदाय के लिए सरकार द्वारा सबरिया डेरा स्कूल स्थापित किए गए हैं। ऐसा पाया गया है कि छत्तीसगढ़ में आमतौर पर हर कुछ ही दूरी पर एक सरकारी स्कूल स्थित है। जिस गाँव में सबरिया डेरा होता है उस गाँव के नाम के पहले सबरिया डेरा लिखते हैं जैसे कि शासकीय प्राथमिक शाला सबरिया डेरा कटौद या शासकीय प्राथमिक शाला सबरिया डेरा लोहर्सी आदि स्कूल का नाम होता है। 'सबरिया डेरा स्कूल' यह नाम जहाँ एक ओर सरकार की इनको पढ़ाने की मंशा का समर्थन करता है वहीं दूसरी ओर गाँव के अन्य समुदाय के लोगों को अपने बच्चों को किस स्कूल में नहीं पढ़ाना है यह भी स्पष्ट कर देता है।

सबरिया डेरा स्कूल अधिकांशत: गाँव के किनारे आखिरी छोर पर स्थित हैं यानी या तो गाँव की शुरुआत में या फिर गाँव के खत्म होने पर। स्कूल के अन्दर जाने पर कम संख्या में बच्चे और एक या दो शिक्षक मिलते हैं। संकुल स्कूल से मध्याह्न भोजन दो डिब्बों में एक साइकिल पर रखकर भोजन प्रभारी द्वारा लाया जाता है। चूँकि भोजन साइकिल से लाना होता है इसलिए ये काम अधिकांशत: बच्चों के माता-पिता या रिश्तेदार करते हैं।

अपने कुछ सालों के अनुभवों के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि बाहरी तौर पर या फिर दूर से देखने पर सभी स्कूलों में चल रही प्रक्रिया लगभग समान नज़र आती है पर करीब से अवलोकन करने पर हर स्कूल में कुछ न कुछ नया देखने और सीखने को मिलता है। शिक्षकों के विचार, उनकी मान्यताएँ, समुदाय, बच्चे, बच्चों की बातें उनके विचार, उनके सीखने के तरीके आदि। जब बच्चों से बातचीत होती है और उनके साथ कुछ गतिविधि करता हूँ तो हर बार मेरा ये विश्वास प्रबल होता है कि हर बच्चे की सीखने की क्षमता अलग-अलग होती है, सभी बच्चे सीखने का प्रयास भी करते हैं हालाँकि उनके तरीके और उनके प्रयास हमारे परम्परागत खाँचों से भिन्न हो सकते हैं। यह बात मैं इस सन्दर्भ मे लिख रहा हूँ क्योंकि यहाँ भी कुछ शिक्षक साथी बच्चों के न सीख पाने और न कर पाने पर ध्यान दे रहे हैं जबकि स्वयं की तैयारी और सीखने में मदद करने की प्रक्रिया से उन्हें कोई शिकायत नहीं है।

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति दोनों ही ऐसे समुदाय हैं जिन्हें ऐतिहासिक कारणों से औपचारिक शिक्षा व्यवस्था से बाहर रखा गया। पहले को जाति के आधार पर विभाजित समाज में सबसे निचले पायदान पर होने के कारण और दूसरे को उनके भौगोलिक अलगाव और सांस्कृतिक अन्तरों के कारण मुख्यधारा के कहे जाने वाले प्रबल समुदायों ने हाशिए पर कर दिया। अनुसूचित जनजातियों का शिक्षा के साथ दोहरा और विरोधाभासी सम्बन्ध रहा है। स्कूल शासन अब तक जनजातीय संस्कारों, विषेशरूप से उनकी अनियमित, मुक्त संस्कृति और समतावादी समाजीकरण और अधिगम व्यवहारों का ख़याल रखने में असफल रहा है। जांजगीर ज़िले में भी यही बातें शाला भ्रमण और शिक्षकों से निरन्तर संवाद के माध्यम से सामने आ रही हैं।

## अध्ययन क्षेत्र

इस अध्ययन के लिए मैंने जांजगीर ज़िले के दो ब्लॉक नवागढ़ और पामगढ़ के कुल पाँच स्कूलों– कटौद, लोहर्सी, देवरी, कमरीद और रहौद का चुनाव किया। इस चुनाव का एक महत्त्वपूर्ण कारण यह था कि वर्तमान में

अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन जांजगीर ज़िले के इन्हीं दो ब्लॉक में मुख्य रूप से कार्यरत है। इन दो ब्लॉक के तहत आने वाली अधिकांश शालाओं के शिक्षकों के साथ विभिन्न मंचों के माध्यम से संवाद होता रहता है। इस अध्ययन के अन्तर्गत किए गए अवलोकनों को कुछ इस तरह व्यवस्थित किया है कि जिसमें एक स्कूल सबरिया डेरा, कटौद का अवलोकन विस्तार से दिया है। इसमें स्कूल, शिक्षक, बच्चों के सन्दर्भ में सामान्य अवलोकन, शाला प्रबन्धन समिति, मध्याह्न भोजन और इस स्कूल के शिक्षकों की इन बच्चों के बारे में मान्यताएँ इत्यादि पर चर्चा है। आगे अन्य स्कूलों के अवलोकन हैं। चूँकि बहुत सी बातें ऐसी थी जो इन चयनित स्कूलों में समान ही थी अत: उनको न दोहराते हुए मैंने इन स्कूलों में दिखने वाली नई बातों को ही रेखांकित किया है।

## सबरिया समुदाय - सभ्यता, संस्कृति एवं परम्परा

सबरिया समुदाय के लोग ज़्यादातर जांजगीर ज़िले में रहते हैं। हालाँकि, समुदाय के कुछ लोग जांजगीर जिले के अलावा बिलासपुर, कोरबा, रायगढ़ और बलौदा बाजार में भी रहते हैं। कुल 99 गाँव की पहचान की गई जहाँ सबरिया समुदाय के सदस्य रहते हैं। इन 99 गाँवों में सबरिया समुदाय के लोगों की जनसंख्या 10 से लेकर 500 तक है। सबरिया समुदाय के जनसंख्या के सम्बन्ध में कोई निश्चित आँकड़े नहीं हैं लेकिन बातचीत के दौरान इकट्ठे किए गए आँकड़ों से लगभग 50,000 की आबादी का अनुमान है।

इन लोगों ने, कुछ आठ पीढ़ी पहले आंध्रप्रदेश से इस क्षेत्र में पलायन किया। रोजी-रोटी के लिए आए आदिवासी मजदूर वर्ग के ये लोग गाँव-गाँव जाकर मजदूरी का काम करते थे। मुख्यत: ये जमीन खोदने, दीवार तोड़ने अथवा घर तोड़ने या किसी के घर में कहीं साँप घुस गया है तो उसे निकालने जैसे काम करते थे। इस दौरान सब्बल (एक लोहे का राड) जो कि एक सिरे से नुकीला होता है इन मजदूरों के द्वारा औजार के रूप में प्रयोग किया जाता था। अमूमन समुदाय के लोग इस औजार को साथ लेकर चलते थे। इसी से शायद सब्बल से समुदाय का नाम सबरिया पड़ गया। इनके रहने के तम्बूनुमा घर गाँव के जिस आखिरी छोर पर होते हैं उसे ही सबरिया डेरा कहा जाता है। वर्तमान में भी सबरिया समुदाय के अधिकांश लोग खेती, मजदूरी आदि कार्य करते हैं। इसके साथ-साथ एक बात और गौर करने वाली है कि इस समुदाय के एक दो लोग अब सरपंच और शिक्षक के पदों तक भी पहुँच गए हैं।

अन्य समुदायों की तरह सबरिया समुदाय भी उत्सवों, त्यौहारों, परम्पराओं में विश्वास रखता है। ये सब उनके जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को दर्शाते हैं। किन्तु शिक्षकों के अनुसार इस समुदाय का हर थोड़े दिन में किसी न किसी उत्सव को मनाना और बच्चों का उनमें शामिल होना, शाला में उनकी अनियमितता और पढ़ाई में बाधा का मुख्य कारण है। लेकिन मुझे लगता हैं कि उनके उत्सवों, त्यौहारों और परम्पराओं को भी हमारी शिक्षा व्यवस्था में या सीखने के स्वरूप में उपयोग किया जा सकता है।

## शासकीय प्राथमिक शाला सबरिया डेरा, कटौद

जांजगीर से लगभग 35 किलोमीटर दूर नवागढ़ ब्लॉक में केरा रोड के दाहिनी ओर लगभग 5000 की आबादी वाला गाँव है कटौद। कटौद के स्कूलों में आजकल कुछ युवा शिक्षकों का समूह पढ़ा रहा है। यहाँ शासकीय प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला और हाई स्कूल एक ही परिसर में संचालित हो रहे हैं। सभी शिक्षक एक दूसरे को सहयोग देते हैं। यहाँ तक कि प्राथमिक और माध्यमिक शाला के शिक्षक आवश्यकता पड़ने पर और शिक्षकों की कमी होने पर, कभी-कभी हाई स्कूल में भी अपनी क्षमता के अनुसार अध्यापन का कार्य करते हैं। माध्यमिक शाला के प्रधान शिक्षक और सीआरसी भी युवा शिक्षकों का मार्गदर्शन करते हैं।

प्राथमिक शाला में कार्यरत एक शिक्षक साथी जो अकादमिक समन्वयक भी हैं, से इन स्कूलों के सन्दर्भ में काफी विस्तार से चर्चा हुई। यह चर्चा मुख्यत: प्राथमिक शाला में बच्चों की शिक्षा के स्तर को लेकर थी। उन्होंने बताया कि, सन् 1990 में उन्होंने शिक्षामित्र के तौर पर शुरुआत की थी। उन्हें शिक्षण कार्य पसन्द है और वे अपनी तरफ़ से ऐसा हर सम्भव प्रयास करते हैं जिससे बच्चे सीख सकें। अच्छी बात यह है कि इस काम में पूरा युवा स्टाफ सहयोग करता है और सब स्कूल के भले के लिए योजना बनाने और उसके क्रियान्वयन के लिए प्रयास करते हैं। जब स्कूल में बागवानी की बात आई तो सभी शिक्षकों ने 500-500 रुपए देकर पौधों के चारों ओर ईंट और सीमेंट का घेरा बनवाया है। हालांकि उनके अनुसार प्राथमिक शाला के प्रधान शिक्षक के साथ काम करना थोड़ा चुनौती भरा है। प्रधान शिक्षक बैठे रहते हैं खाली रहने पर भी कक्षा में नहीं जाते। इस पर अकादमिक समन्वयक का कहना है कि उनको क्लास नहीं लेना है तो कोई बात नहीं वे कार्यालय का काम करते हैं और अन्य शिक्षक साथी अकादमिक कार्य करते हैं।

बातों-बातों में गाँव और स्कूल के विषय में चर्चा करते हुए उन्होंने सबरिया डेरा स्कूल का ज़िक्र किया जो कि वहाँ से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। जैसा कि नाम से ही पता चलता है कि वहाँ सबरिया समुदाय के लोग रहते हैं और मुख्यधारा के लोगों का नज़रिया अभी भी सबरिया समाज के लिए बराबरी का नहीं है। जिस प्रकार कमार, देवार समुदाय के बच्चों को समझा जाता है कुछ इसी तरह का नज़रिया इनके बारे में भी है। मैंने सबरिया डेरा प्राथमिक शाला का अवलोकन करने जाना तय किया और अकादमिक समन्वयक और मैं सबरिया डेरा की ओर चल दिए।

## कटौद स्कूल

सबरिया पारा (मोहल्ला) कटौद माध्यमिक शाला से कुछ ही दूरी पर स्थित है। प्राथमिक स्कूल का भवन, रसोई कक्ष, शौचालय, चारदीवारी सभी मौजूद है। स्कूल के बच्चे बाहर खेल रहे थे। कार्यालय में पटेल सर कुछ कार्यालयीन कार्य में व्यस्त थे। मैंने अपना परिचय दिया और बातचीत शुरू की। पटेल सर ने बताया "अधिकांश बच्चों के अभिभावक शराब बनाने का काम करते हैं, उनमें शिक्षा के प्रति जागरूकता नहीं है इसलिए कम बच्चे स्कूल आते हैं।" उन्होंने कहा हालाँकि इसके बारे में अभी कुछ कहना जल्दबाजी होगी कि वर्तमान परिस्थितियों में जीने के लिए लोग आजीविका को महत्व दें या भविष्य के लिए संरक्षित की जाने वाली (वर्तमान में चल रही शिक्षा पद्धति) शिक्षा को। सबरिया डेरा शाला के एक शिक्षक साथी ने कहा कि, "बच्चों की भाषा को लेकर भी कुछ चुनौतियां हैं, बच्चे अलग भाषा का प्रयोग करते हैं जो न छत्तीसगढ़ी है न हिन्दी।" शिक्षक ने बताया, "शासन की योजना के अनुसार हर एक किलोमीटर के अन्दर सबरिया बच्चों को स्कूल तो मिल गया, लेकिन शिक्षकों को उनकी भाषा की समझ न होने की वजह से पढ़ाने में परेशानी होती है।"

धमतरी में कार्य करते हुए अपने अनुभवों के आधार पर एक बात तो मैं कह सकता हूँ कि स्कूल को बच्चों के लायक बनाने में शासन पूरी तरीके से कामयाब नहीं हो पाया है। यहाँ तो बच्चों को स्कूल के लायक बनने की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं।

जिस दिन मैं कटौद स्कूल गया उस दिन कक्षा 1 से कक्षा 5 तक के कुल 47 में से 27 बच्चे स्कूल नहीं आए थे। युवा शिक्षक, जो इस स्कूल में लगभग तीन साल गुजार चुके हैं, ने कहा "सर मैं यहाँ से स्थानान्तरण चाहता हूँ यहाँ मुझे अच्छा नहीं लगता। मेरे बच्चे भी बड़े हो रहे हैं। उनकी शिक्षा के लिए मैं बिलासपुर स्थानान्तरण चाहता हूँ।" हालाँकि अपने स्थानान्तरण की बाट जोहते शिक्षक को मैंने इस बात पर राजी किया कि जब तक वे यहाँ रहेंगे अच्छे से मेरे साथ काम करेंगे। स्कूल में पदस्थ एक और शिक्षिका का

भी लगभग यही कहना था। पुरुष शिक्षक साथी ने कुछ ही दिनों में और महिला शिक्षक साथी ने लगभग एक साल में अपने लिए स्थानान्तरण को ही उपयुक्त रास्ता मान लिया है।

अन्य स्कूलों के मुकाबले इस स्कूल में स्कूल अवधि के दौरान ही, यानी जल्दी ही ताले लग जाते हैं। बच्चों से पूछने पर अकसर यही जवाब मिलता है कि शिक्षक आए थे फिर उन्होंने छुट्टी कर दी। ऐसा क्यों किया यह पता नहीं। अवलोकन के दिन भी यही हुआ और बच्चों ने कहा इसलिए अब हम नहाने के लिए नाला पर जा रहे हैं। हालांकि शिक्षकों के अनुसार बच्चे कई-कई दिन नहाकर नहीं आते, उन्हें इसकी जरूरत ही नहीं लगती। अभिभावकों से बात करने पर मालूम हुआ कि उनको भी नहीं पता कि छुट्टी क्यों हुई। जैसा कि मैं पहले भी यह बात साझा कर चुका हूँ कि सबरिया डेरा स्कूल और वहाँ रह रहे लोगों के लिए कुछ विशेष चुनौतियाँ भी हैं जिनके कारण बच्चे अन्य कार्यों में संलग्न रहते हैं, स्कूल कम ही आ पाते हैं, ऐसी परिस्थितियों में जिस दिन वे आ पाएँ उस दिन ही स्कूल में ताला लगा रहना और भी चिंता का विषय है।

## बच्चे

ठण्ड के मौसम में जब लोग मफ़लर, स्वेटर के बिना घर से बाहर नहीं निकलते। सबरिया डेरा स्कूल के बच्चे अपनी बिना हुक की कमर से नीचे आती पैंट और बदन दिखाती टूटे बटन की शर्ट के साथ ऊर्जा से लबालब वहाँ थे। कुछ बच्चों को छोड़कर किसी ने यूनिफॉर्म नहीं पहना था, उनके पास वास्तव में यूनिफार्म है या नहीं अगले विजिट में इसका पता करने की कोशिश करूँगा।

बच्चे धूप में खेल रहे थे तब मैंने उनसे कुछ देर बात की। बहुत से बच्चे नहाकर नहीं आए थे। कुछ बच्चों की बहती हुई नाक ने होठों तक का सफ़र पूरा कर लिया था। उन्होंने बताया कि स्कूल में खेलने में मज़ा आता है और भी कई बातें हुईं। कुछ फोटो भी खींचे गए। लेकिन जब उन बच्चों के साथ मेरी फोटो खिंचाने की बारी आई, तब मैंने सेल्फ़ी न लेते हुए बच्चों से कहा मैं सबको मोबाइल से फोटो खींचना सिखाता हूँ। कोई खींच सकेगा क्या? कई बच्चे तैयार हो गए और एक बच्चे छोटू ने फोटो खींची और एक बच्ची उसे समझा रही थी। "सर का मोबाइल टच स्क्रीन है देख के चलाना।" ये वही बच्चे हैं जिनके सीखने की गति को लेकर आमतौर पर शिक्षक साथियों को और समाज के एक बड़े वर्ग को सन्देह रहता है। जो बच्चे दौड़ते, खेलते थकते नहीं, जो बच्चे ठण्ड में नंगे पाँव जमीन पर दौड़ते रहते हैं, पलक झपकते ही दीवार पर, छत पर चढ़ जाते हैं, एक बार बताने पर ही स्मार्ट फोन से फोटो खींच लेते हैं, टूटे हुए बाथरूम को अपना किचन मानकर खाना पकाते हैं, उन बच्चों के बारे में शिक्षक साथी अकसर यही कहते दिखते हैं, ये नहीं सीखते, न सीखना चाहते या फिर सीख ही नहीं सकते।

## शाला प्रबन्धन समिति

इन शालाओं के शिक्षकों से शाला प्रबन्धन समिति के विषय में चर्चा करने पर यह बात निकलकर आई कि अधिकांश शालाओं में शाला प्रबन्धन समिति सुचारु रूप से संचालित नहीं होती। चूँकि ग्राम कटौद में सरपंच महोदय सबरिया समुदाय से ही आते हैं इसलिए वो व्यक्तिगत रूप से रुचि रखकर इस स्कूल के लिए प्रयास कर रहे हैं। बच्चों की स्कूल में उपस्थिति के प्रयास और एसएमसी में सहभागिता को लेकर हुई चर्चा से यह निकल कर आया कि फ़िलहाल शाला प्रबन्धन समिति अपने दिशा निर्देशों के अनुसार काम करने से कोसों दूर हैं। यह मैं अपने अनुभवों के आधार पर कह रहा हूँ और शिक्षक ने जो बताया वो भी कुछ इसी तरह का था।

## मध्याह्न भोजन

मध्याह्न भोजन का संचालन सरपंच जी की पत्नी की जिम्मेदारी है। स्कूल में मध्याह्न भोजन

के लिए एक नया और पक्का कमरा होने के बावजूद मध्याह्न भोजन सरपंच के घर से ही बन कर आता है। हालाँकि पूरी बातचीत के दौरान शिक्षक साथी की ओर से यही बात कही जा रही थी कि स्कूल के प्रति सरपंच का रवैया सहयोगात्मक है।

जिस प्रकार हम कई शहरों में द्विस्तरीय, बहुस्तरीय जीवन शैली देखते हैं, कुछ उसी तरह का एक छोटे से गाँव कटौद में भी दिख जाता है। गाँव के छोर पर बसे सबरिया पारा और उसके स्कूल के पास की जगह झुग्गी झोपड़ी और कुछ कच्चे मकानों में तब्दील हो गई है। कुछ ने बिना प्लास्टर के ईंट के घर भी बना लिए हैं।

## बच्चों और उनके सीखने को लेकर शिक्षकों की मान्यताएँ

शिक्षकों का कहना है ये तेलुगु बोलते हैं (हालाँकि किसी को यह पक्का पता नहीं था कि वे बच्चे या वह भाषा तेलुगु है भी या नहीं)। ये तो छत्तीसगढ़ी भी नहीं बोल पाते, ये हिन्दी क्या बोलेंगे और पढ़ेंगे और फिर अँग्रेजी क्या बोलेंगे? पढ़ाई में इनकी रुचि नहीं है। इन बच्चों के अभिभावक इनकी शिक्षा पर ध्यान नहीं देते। ये स्कूल से लगातार अनुपस्थित रहते हैं। इनके घरों में शराब बनाई जाती है। ये लोग काम के लिए अन्य राज्यों में पलायन करते हैं। ये नहाते नहीं है, गन्दे रहते हैं आदि। इन कथनों में सभी तरह के नकारत्मक पूर्वाग्रह हैं, जो उन बच्चों के साथ उनके व्यवहार को अत्याधिक दूरी पैदा करने वाला ही नहीं वरन्  उनके प्रति हिकारत भरा रवैया भी दिखाता है।

इस स्कूल से कक्षा पाँचवी पास कर चुके एक बच्चे से जब मैंने दीवार पर लिखे 'माप' को पढ़ने के लिए कहा ताकि आगे की बात की जा सके तो पाया कि वह पढ़ पाने में असमर्थ है। अन्य बच्चों से भी पूछने पर यह साफ़ हो गया कि अधिकांश बच्चे पढ़ पाने में असमर्थ हैं। 2017 के नए सत्र में कक्षा पहली में सिर्फ़ दो बच्चों ने ही प्रवेश लिया था। कुल मिलाकर कक्षा पहली से पाँचवी तक 21 बच्चे ही थे और इनके लिए दो शिक्षक। स्कूल में चल रही प्रक्रियाओं को देखते हुए बच्चों के इतनी कम संख्या में प्रवेश पर ज़्यादा आश्चर्य नहीं हो रहा था।

कुछ साल पहले दंतेवाड़ा में रहते हुए, जब मैं कुछ बच्चों को सीखने में आ रहीं चुनौतियों को याद करता हूँ तो कई बातें मन में आती हैं। एक बच्चे के सन्दर्भ में हुए मेरे अनुभव का जिक्र करूँगा। आंध्रप्रदेश से पलायन करके आए हुए एक परिवार के एक बच्चे के बारे में, शिक्षकों और बच्चे के माता-पिता द्वारा कहा जा रहा था कि बच्चा गधा है कुछ सीखता नहीं। लेकिन बाद में कुछ और ही बात निकल कर आई। वह बात उसके और स्कूल के बीच की संवादहीनता को सबके सामने ला रही थी। वह यह कि बच्चा लगभग 6 साल का था और सिर्फ़ तेलुगु भाषा ही थोड़ी बहुत ठीक से बोल पाता था और थोड़ी बहुत हिन्दी समझ पाता था। इस वजह से शिक्षक परेशान होकर उसकी ओर ध्यान ही नहीं देते थे। इसलिए बच्चा, कक्षा में चलने वाली अकादमिक गतिविधियाँ में भाग नहीं ले पाता था।

## शासकीय प्राथमिक शाला सबरिया डेरा, लोहर्सी (पामगढ़)

शिवरीनारायण से बिलासपुर मार्ग में लोहर्सी नाम का एक गाँव है। शासकीय प्राथमिक शाला सबरिया डेरा, लोहर्सी में एक शिक्षिका और एक शिक्षक कार्यरत हैं।

शिक्षक और शिक्षिका समर कैम्प, अमरकंटक में शामिल हो चुके हैं, इसलिए उनसे कई अन्य मुद्दों पर हमारे साथियों की बातचीत हो चुकी थी। इस स्कूल में कक्षा पहली से पाँचवी तक 21 बच्चे हैं। प्रत्येक कक्षा में औसतन लगभग पाँच बच्चे, जैसा कि अन्य सबरिया डेरा के स्कूलों में संख्या होती है। कटौद सबरिया डेरा स्कूल

और लोहर्सी सबरिया डेरा स्कूल के बच्चों, शिक्षक और अभिभावकों से चर्चा और स्कूल के अध्ययन से यह लगने लगा कि बच्चों के माता-पिता की आर्थिक और सामाजिक स्थिति लगभग समान है। रहन-सहन वेश-भूषा, बात करने की भाषा भी एक ही है। और जिन गाँवों में यह लोग रह रहे हैं उसका भी स्तर कोई बहुत ज्यादा भिन्न नहीं है।

लेकिन, स्कूल में अवलोकन से कुछ अन्तर पता चलता है। एक ओर जहाँ कटौद के बच्चे झिझकते नजर आते हैं, पाँचवी पास बच्चे भी कुछ पढ़-लिख पाने में सहज नहीं थे, कोई भी बच्चा स्कूल यूनिफॉर्म नहीं पहने था। वहीं, लोहर्सी के बच्चे बारी-बारी अपना परिचय दे रहे थे, हिन्दी, अँग्रेजी की कविता सुना रहे थे और कविता बोलने के लिए अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे। कुछ बच्चे दोबारा भी कविता सुनाना चाह रहे थे।

## शासकीय प्राथमिक शाला सबरिया डेरा, देवरी

शासकीय प्राथमिक शाला सबरिया डेरा, देवरी संकुल केंद्र खरौद में स्थित है। यहाँ कार्यरत शिक्षक बताते हैं कि, पहले वो स्कूल के सामने पेड़ के नीचे बच्चों को पढ़ाते थे। बाद में स्कूल भवन का निर्माण हुआ। स्कूल का नाम भले ही सबरिया डेरा है लेकिन यहाँ अन्य समुदाय के भी बच्चे पढ़ते हैं, इसी वजह से अब लोगों का स्कूल के प्रति नज़रिया बदला है। वहाँ कार्य कर रही शिक्षिका का कहना है, "मैं बच्चों से सिर्फ हिन्दी में ही बात करती हूँ बच्चे भी हिन्दी बोलने की कोशिश करते हैं।" इसमें बच्चों की अपनी पहचान खो जाने के ख़तरे का कोई अहसास नहीं है।

## शासकीय प्राथमिक शाला सबरिया डेरा, कमरीद

यहाँ पदस्थ शिक्षक अपने अनुभवों के आधार पर कहते हैं कि सबरिया डेरा समुदाय के बच्चों के साथ काम करना काफी चुनौती भरा है। समुदाय के लोग थोड़े-थोड़े दिन में कुछ न कुछ त्यौहार मनाते रहते हैं जिसकी वजह से बच्चे स्कूल नहीं आते। कुल मिलाकर मेरी यही समझ बनती है कि सबरिया समुदाय का जीवन उत्सव और उत्साह से भरा है पर हमारी वर्तमान स्कूली व्यवस्था के खाँचे में वो फिट नहीं बैठते।

कुछ बच्चे जो पहले पास के ही दूसरे स्कूलों में पढ़ते थे और किन्हीं कारणों से इस स्कूल में आ गए थे। वे बच्चे अपनी बातचीत के दौरान अँग्रेजी, हिन्दी और तेलगु शब्दों का उपयोग कर रहे थे। वे हमको भी हर हिन्दी शब्द का तेलगु में समानार्थी शब्द बताते जा रहे थे। इससे यह लगता है कि सभी बच्चों में और सबरिया बच्चों में भी सीखने की क्षमता है। इसीलिए दूसरे स्कूल से आए बच्चों की प्रतिभा, उनके शब्द भण्डार और उनकी भाषा पर पकड़ को देखते हुए लग रहा था कि कई भाषाओं को सीखने की कोशिश जैसे कदम उनके सीखने को समृद्ध बनाएँगे न कि उसमें बाधा उत्पन्न करेंगे।

## शासकीय उन्नयित प्राथमिक शाला सबरिया डेरा, रहौद

वर्तमान में यहाँ तीन शिक्षक पदस्थ हैं। इनमें से एक, विशेष पदस्थापना के तहत यहाँ पदस्थ हैं और दो शिक्षक पहले से ही शाला में हैं। वर्तमान में शाला में 80 बच्चे दर्ज हैं। उस दिन इनमें से आधे ही यानी 40 बच्चे उपस्थित थे। शिक्षकों ने बताया कि सबरिया डेरा और धनवार डेरा के बच्चे प्राय: अनुपस्थित रहते हैं। हर माह कुछ न कुछ त्यौहार मनाते हैं और सात-आठ दिन बच्चे अनुपस्थित रहते हैं। कुछ परिवार रोजी-रोटी के लिए पलायन कर गए हैं और बच्चे भी उनके साथ चले गए हैं।

इस स्कूल व अन्य स्कूलों के अवलोकन और शिक्षकों से हुई बातचीत से पता चला कि सबरिया समुदाय के अधिकांश बच्चे नियमित स्कूल नहीं आते। नियमित स्कूल न आने के निम्न कारण बताए गए, जो वर्तमान परिस्थिति को दिखाते हैं और इस तरह सुझाते भी हैं कि

किन पहलुओं पर काम करने की जरूरत है। ये हैं:

- सबरिया समुदाय के अभिभावकों का शिक्षा के प्रति जागरूक न होना।
- कम उम्र में ही लड़के और लड़कियों का विवाह कर देना।
- रोजगार के लिए पलायन करना।
- घरों में शराब बनाना और अभिभावकों का और कई बार बच्चों का भी शराब का सेवन करना।
- सबरिया समुदाय के द्वारा बोली जाने वाली भाषा का शिक्षकों को समझ न आना।
- स्कूल की अवधि में ही आजीविका के लिए बकरी, गाय चराना या फिर मछली पकड़ना।

## समुदाय से चर्चा

इस दौरान हमने समुदाय से भी बातचीत की। ऊपर एक दो जगह हमने इसका उल्लेख भी किया है। इससे भी कई महत्त्वपूर्ण बातें सामने आईं। कटौद के सरपंच ने कहा, "सर जी अब ए बच्चा मन बार ओही गुरुजी ल लाबो जो की एमन के बात समझ सके अउ ए मन के भाषा बोल सके"। उन्होंने शिक्षक व बच्चों में दूरी को कम करने की और बच्चों की भाषा इस्तेमाल करने की ज़रूरत को बहुत सरल शब्दों में रख दिया।

समुदाय द्वारा आयोजित एक अन्य बैठक में भी हमको शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ। इस बैठक में फ़ैसला हुआ कि अभिभावक अपने बच्चों को स्कूल भेजें और खेतों में या मजदूरी न करवाएँ। आदिवासी समाज में दण्ड का भी प्रावधान है तो ये फैसला लिया गया कि जो भी अपने बच्चों को (बेवजह) स्कूल नहीं भेजेगा, उसे शाला विकास के लिए पाँच रुपए दण्ड स्वरूप स्कूल में जमा करना होगा। बच्चों को स्कूल भेजने पर सभी की सहमति बनी।

जैसे-जैसे स्कूल के आसपास की आबादी बढ़ रही है अन्य कई जातियों के लोग भी यहाँ पर स्थाई रूप से बसने लगे हैं। लेकिन किसी भी अन्य जाति के बच्चे सामान्यतः इन स्कूलों में नहीं आते। वे सब दूसरे स्कूलों में जाते हैं। इन अन्य स्कूलों के बच्चों के पालकों से सम्पर्क के दौरान पालकों ने कहा कि यह स्कूल सबरिया समुदाय का है, हम अपने बच्चों को यहाँ नहीं भेजेंगे। शिक्षक ने समझाया कि बस नाम भर ही सबरिया डेरा है, हर समुदाय के बच्चे यहाँ पढ़ सकते हैं। इस पर पालकों ने अपना वोटर आईडी कार्ड दिखाते हुए कहा कि वोटर आईडी में तो गाँव भाटापारा, कटौद लिखा है तो फिर स्कूल का नाम सबरिया डेरा क्यों? पहले स्कूल का नाम बदलवाओ तब हम अपने बच्चों को इस स्कूल में पढ़ाएँगे। अब इस स्कूल के शिक्षक और समुदाय सरपंच के साथ मिलकर, स्कूल का नाम सबरिया पारा से भाटापारा करवाने के प्रयास में लगे हैं।

## बच्चों के सीखने के सन्दर्भ में कुछ शिक्षकों द्वारा किए जा रहे प्रयास

सबरिया डेरा की शालाओं में एक ओर तो कुछ शिक्षक बच्चों को सिखाने के प्रयास से हतोत्साहित हो रहे हैं वहीं दूसरी ओर कुछ शिक्षक बच्चों को सीखने में मदद का भरसक प्रयास कर रहे हैं। शासकीय उन्नयित प्राथमिक शाला सबरिया डेरा, रहौद की शिक्षिका बच्चों से कुछ घुली-मिली लग रही थी। जब मैंने शिक्षिका से पूछा कि आप इतनी आसानी से कैसे बच्चों से घुलमिल गई हैं और बच्चे खेल रहे हैं बातचीत कर रहे हैं। तब उन्होंने बताया कि वो सबरिया समुदाय से ही हैं लेकिन उनकी पढ़ाई और परवरिश बाहर हुई है। उनके पिता जी इस समुदाय से पढ़ कर सरकारी नौकरी पाने वाले पहले व्यक्ति थे। वे पुलिस विभाग में थे। और इस समुदाय से वे पहली महिला शिक्षिका हैं। क्योंकि वे इस समुदाय से आती हैं इसलिए उनको बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषा समझ आती है। और यह बच्चों को सीखने में मदद करती

है। शिक्षिका से जब मैंने पूछा कि जिस भाषा का आप प्रयोग कर रही हैं क्या वो तेलुगु भाषा है, तो उन्होंने कहा कि ये तेलुगु नहीं सबरिया बोली है और इसकी कोई लिपि नहीं है।

स्कूल में कार्यरत शिक्षक बच्चों को सिखाने का हर सम्भव प्रयास कर रहे हैं। कक्षा एक के बच्चे एक एनजीओ द्वारा दिए गए किट और कंकड़ पत्थरों से गणित की अवधारणा पर अपनी समझ बनाते और संख्याओं को जोड़ते नजर आ रहे थे। कक्षा पाँचवी की एक बच्ची से जब यह पूछा गया कि जो भाषा तुम बोल रही है क्या उस भाषा में 1 2 3 4 ... गिनती बोल सकती हो। शिक्षिका ने कहा कि नहीं, यह बच्ची वो वाली गिनती तो नहीं बोल पाएगी। लेकिन उस बच्ची ने कहा कि वो अपनी भाषा में 10 तक गिनती गिन सकती है। और उसने गिनती बोल के दिखा दिया।

रहौद की शिक्षिका के सामने सबरिया समुदाय की होने की वजह से निश्चित रूप से बच्चों को सिखाने में भाषा को लेकर कोई चुनौती नहीं है जो कि कटौद की शिक्षिका और शिक्षक को हो रही है। लेकिन कोई शिक्षक साल भर बच्चों को सिखाने का प्रयास कर रहा है और बच्चे कुछ भी सीख नहीं पा रहे हैं ये बात समझ में नहीं आती। बातचीत में लोहर्सी की शिक्षिका ने कहा कि, "मैं हर जगह तो बच्चों को सिखाने नहीं जा सकती।"

जब भी मुझे रायपुर और अन्य जगहों पर ट्रेनिंग के लिए बुलाया गया है तो मैंने सबरिया डेरा स्कूलों में काम कर रहे शिक्षकों को अपने अनुभव भी बताए हैं । मेरा मानना है कि–

- शिक्षकों को इन बच्चों को सम्मान देते हुए बातचीत करनी चाहिए और इनकी झिझक हटाने में सहयोग देना चाहिए।
- इसी समुदाय से जो बच्चे आठवीं पढ़ जाते हैं उनका इन बच्चों को सिखाने में सहयोग लेना चाहिए।
- यह कोशिश करनी चाहिए कि सबरिया समुदाय से ज़्यादा से ज़्यादा बच्चे पढ़कर निकलें खासकर प्राथमिक और उच्च प्राथमिक शालाओं में पढ़कर।
- बच्चों को ज़्यादा से ज़्यादा एक्सपोजर का मौका मिलना चाहिए।

यहाँ पर एक बात गौर करने की है कि इस समुदाय से बहुत ही कम बच्चे आठवीं तक पढ़ाई कर पाते हैं, और तो और कक्षा पाँच पास किए बच्चे भी वर्णमाला भी नहीं पढ़ पाते। शिक्षक भी इनको सीखने में उस तरह से मदद नहीं कर पाते हैं जैसी उनको करनी चाहिए।

वहीं दूसरी ओर काफी जद्दोजहद और सीएसी और सरपंच के लगातार प्रयासों के बाद सबरिया पारा कटौद में दो शिक्षकों की नियुक्ति हो गई है। इनमें से एक सबरिया समुदाय से ही है। हालाँकि यह शिक्षक बचपन से ही एक हाथ से कुछ कर पाने में असमर्थ है लेकिन फिर भी ये शिक्षक स्कूल आने से पहले, स्कूल में पढ़ने वाले प्रत्येक बच्चों के घर जाकर बच्चों को शाला लेकर आते हैं। मध्याह्न भोजन भी अब शाला परिसर में ही बनता है।

एक अन्य स्कूल में स्कूल लीडरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम के तहत स्कूल के प्रधान शिक्षक द्वारा अनुपस्थित बच्चों को स्कूल में लाने का प्रयास किया गया था। इसमें वो बहुत हद तक सफल भी हुए थे। वर्तमान में भी अगर बच्चे अनुपस्थित रहते हैं तो शिक्षक पालकों से मिलने जाते हैं। परन्तु एसएलडीपी कार्ययोजना ऐसे बहुत से प्रयासों की श्रेणी में शामिल हो गई है जो एक साल के प्रोग्राम मोड के रूप में तब्दील हो जाते हैं। शिक्षकों का मानना है कि वह तो पिछले साल की कार्ययोजना थी, अब थोड़ी करना है।

एक शिक्षक ने कहा कि साफ-सफाई के अभाव में कई बीमारियों के वजह से भी बच्चे कई बार स्कूल नहीं आ पाते है जैसे कि सात से आठ बच्चों को एक साथ चिकनपॉक्स हो जाना। और इसमें हम कुछ नहीं कर सकते। इन

सब कथनों और मान्यता के बीच यह आँकना मुश्किल है कि कौन-सा कथन सही है और कौन-सा मात्र एक मान्यताओं से जुड़ा हुआ यथार्थ से मेल न खाने वाला मत।

अन्तत: हम यही कह सकते हैं कि तमाम मान्यताओं और चुनौतियों के बावजूद कुछ शिक्षक हैं जो कि सबरिया डेरा के बच्चों को शाला लाने, सीखने में मदद करने हेतु प्रयासरत है।

## निष्कर्ष

इस छोटे से अध्ययन से भी यह स्पष्ट रूप से दिखता है कि सभी बच्चों में सीखने की क्षमता होती है शायद सीखने के तरीके भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। वंचित समुदाय के बच्चों को शिक्षा दिलाने हेतु सरकार द्वारा इन कुछ समुदायों के नाम से ही सरकारी शालाएँ स्थापित की गई हैं। लेकिन इसी प्रकार की पहल इन जनजतियों के बच्चों को अन्य समुदाय के बच्चों से अलग करती हुई नजर आतीं है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में 'अनुसूचित जाति और जनजाति के बच्चों की समस्याएँ' पर केन्द्रित हिस्से के अनुसार भी अनुसूचित जाति और जनजाति के बच्चों की शिक्षा की जमीनी वास्तविकता के सर्वेक्षण से यही निष्कर्ष निकलता है कि राज्य की नीति और नौकरशाही दोनों ने मिलकर अभी तक संख्यात्मक रूप से बेहद अपर्याप्त और गुणात्मक रूप से बेहद घटिया शिक्षा प्रदान की है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में दिए गए सुझावों की अनुशंसा करते हुए और जमीनी चुनौतियों के अवलोकन के बाद भी मैं पूरे तरीके से बदलाव के बारे में विश्वास के साथ नहीं कह सकता, किन्तु कुछ बातों को इस शिक्षा व्यवस्था में तत्काल लागू किया जाना या पहल की जानी चाहिए। जैसे- जरूरी है कि घर में बोली जा रही भाषा ही स्कूल में शिक्षा के प्रारम्भिक वर्षों में संवाद / निर्देश का माध्यम हो। किन्तु इस दिशा में प्रयास करने हेतु शिक्षकों को समग्रता से प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। शिक्षकों को और समाज के अन्य लोगों को इन आर्थिक व सत्ता की दृष्टि से वंचित समाज की सभ्यता, सांस्कृतिक विविधताओं व क्षमताओं को समझने की ज़रूरत है। विद्यालयी ढाँचों में जनजाति समुदाय की संस्कृति और सभ्यता को स्थान देने की आवश्यकता है।

नीरज राणा, वर्ष 2013 से अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में फेलोशिप प्रोग्राम के अन्तर्गत जुड़े हुए हैं। वर्तमान में, फाउण्डेशन के जिला संस्थान जांजगीर चांपा में फील्ड रिसर्च टीम के साथ कार्यरत हैं।
सम्पर्क : neeraj.rana@azimpremjifoundation.org